चतुर्थोऽध्यायः

कृदन्त प्रकरणम्

धातुओं से "ति तः अन्ति" आदि तिङ् प्रत्यय लगाकर विभिन्न लकारों में जो क्रियापद बनाये जाते हैं उन्हें "तिङ्त" कहते हैं।

उनके अतिरिक्त धातुओं के आगे "कृत्" प्रत्यय लगाकर कृदन्त (कृत्अन्त) रुप भी बनाये जाते हैं। कृदन्त अव्यय के सिवा इसके शेष कृदन्तों के रूप तीन लिंगों एवं सातों विभक्तियों में चलते हैं।

कृदन्त-पदों में अनुवाद से पर्याप्त सहायता मिलती है क्योंकि इनकी रचना क्रियापदों की अपेक्षा सरल होती है। अतः छात्रों को चाहिए कि इस प्रकरण को ध्यान से समझ लें। वैसे तो "कृत" प्रत्यय बहुत से हैं, परन्तु यहाँ पर केवल "शतृ-शानच्" "क्त-क्तवतु," "तव्य-अनीयर्", "क्त्वा-ल्यप्" एवम् "तुमुन्" प्रत्ययों का ही उल्लेख किया जाएगा क्योंकि इन्हीं का अधिकतर प्रयोग होता है।

प्रथमोऽभ्यासः

वर्तमान कृदन्त - ("शतृ - शानच्")

1. जहां दो क्रियाएँ एक ही समय में हो रही हों वहाँ पहली क्रिया के साथ "शतृ" व "शानच्" का प्रयोग किया जाता है। "शतृ" का "अत्" और "शानच्" का "आन" या "मान" शेष रहता है।

"जाता हुआ" पढ़ता हुआ, खाता हुआ अत्यादि अर्थों को प्रकट करने के लिए, धातुओं से वर्तमान कालिक "शतृ" और "शानच्" प्रत्यय लगाकर शब्दों में प्रयोग किया जाता है।

2. "शतृ" "शानच्" प्रत्यान्त शब्दों की सिद्धि के लिए व्याकरण समझना आवश्यक है, परन्तु इतना तो कभी न भूलना चाहिए के परस्मपैदी धातुओं के आगे "शतृ" प्रत्यय आत्मनेपदी धातुओं के आगे "शानच्" प्रत्यय आता है भ्वादि, दिवादि, तुदादि, चुरादि धातुओं के आगे "मान" और शेष गणों की धातुओं के आगे "आन" आता है। जैसे :-

(*i*) नाचते हुए मोरों को देखकर कौन प्रसन्न नहीं होता।
नृत्यतो मयूरानवलोक्य को न प्रसीदति।

(*ii*) सिंहासन पर शोभायमान राजा को सब नमस्कार करते हैं।
सिंहासने शोभायमान् नृपं सर्वे नमन्ति।

(*iii*) कड़वे बोलते हुए मनुष्य की कौन निन्दा न करेगा ?
कटु ब्रुवाणं जनं को निन्दिष्यति ?

परस्मैपद में शतृ - प्रत्ययान्त शब्द

धातु	अर्थ	नपुं	पुं०	स्त्री०
भू	होना	भवत्	भवन्	भवन्ती
गम् (गच्छ)	जाना	गच्छत्	गच्छन्	गच्छन्ती
पा (पिब्)	पीना	पिबत्	पिबन्	पिबन्ती
स्था (तिष्ठ)	ठहरना	तिष्ठत्	तिष्ठन्	तिष्ठन्ती
पठ्	पढ़ना	पठत्	पठन्	पठन्ती
वद्	बोलना	वदत्	वदन्	वदन्ती
पत्	गिरना	पतत्	पतन्	पतन्ती
चल्	चलना	चलत्	चलन्	चलन्ती
त्यज्	छोड़ना	त्यजत्	त्यजन्	त्यजन्ती
रक्ष्	बचाना	रक्षत्	रक्षन्	रक्षन्ती
वस्	रहना-बसना	वसत्	वसन्	वसन्ती
गै	गाना	गायत्	गायन्	गायन्ती

पच्	पकाना	पचत्	पचन्	पचन्ती
हस्	हंसना	हसत्	हसन्	हसन्ती
धाव्	दौड़ना	धावत्	धावन्	धावन्ती
दा	देना	ददत्	ददन्	ददती
कृ	करना	कुर्वत्	कुर्वन्	कुर्वती
क्री	खरीदना	क्रीणत्	क्रीणन्	क्रीणती
जागृ	उठना	जाग्रत्	जाग्रन्	जाग्रती
अस्	होना	सत्	सन्	सती
स्वप्	सोना	स्वपत्	स्वपन्	स्वपती
आप्	प्राप्त करना	आप्नुवत्	आप्नुवन्	आप्नुवती
इष्	इच्छा करना	इच्छत्	इच्छन्	इच्छती-इच्छन्ती
प्रच्छ्	पूछना	पृच्छत्	पृच्छन्	पृच्छती-पृच्छन्ती
मज्ज्	डूबना	मज्जत्	मज्जन्	मज्जती-मज्जन्ती
लिख्	लिखना	लिखत्	लिखन्	लिखती-लिकन्ती
स्पृश	छूना	स्पृशत्	स्पृशन्	स्पृशती-स्पृशन्ती
कथ	कहना	कथयत्	कथयन्	कथयन्ती
क्रीड्	खेलना	क्रीडत्	क्रीडन्	क्रीडन्ती
गर्ज्	गर्जना	गर्जत्	गर्जन्	गर्जन्ती
घ्रा (जिघ्र)	सूंघना	जिघ्रत्	जिघ्रन्	जिघ्रन्ती
तृ	तैरना	तरत्	तरन्	तरन्ती
दृश् (पश्य)	देखना	पश्यत्	पश्यन्	पश्यन्ती
नृत्	नाचना	नृत्यत्	नृत्यन्	नृत्यन्ती

आत्मनेपद में ''शानच्'' प्रत्ययान्त शब्द

धातु	अर्थ	नपुं०	पुं०	स्त्री०
ईक्ष्	देखना	ईक्षमाणम्	ईक्षमाणः	ईक्षमाणा
सेव्	सेवा करना	सेवमानम्	सेवमानः	सेवमाना
लभ्	पाना	लभमानम्	लभमानः	लभमाना
यत्	यत्न करना	यतमानम्	यतमानः	यतमाना
जन्	पैदा करना	जायमानम्	जायमानः	जायमाना
दय्	दया करना	दयमानम्	दयामानः	दयामाना
विद्	होना	विद्यामानम्	विद्यमानः	विद्यमाना
मुद्	प्रसन्न होना	मोदमानम्	मोदमानः	मोदमाना
मन्	मानना	मन्यमानम्	मन्यमानः	मन्यमाना
वृध्	बढ़ना	वर्धमानम्	वर्धमानः	वर्धमाना
मृ	मरना	म्रियमाणम्	म्रियमाणः	म्रियमाणा
शी	सोना	शायनम्	शायानः	शयाना
ईश्	शासन करना	ईशानम्	ईशानः	ईशाना
युध्	लड़ना	युध्यमानम्	युध्यमानः	युध्यमाना

उभयपद में शतृ - शानच् प्रत्ययान्त शब्द

धातु	अर्थ	प्रत्यय	नपुं०	पुं०	स्त्री०
कृ	करना	[शतृ]	कुर्वत्	कुर्वन्	कुर्वती
		[शानच्]	कुर्वाणम्	कुर्वाणः	कुर्वाणा
चुर	चुराना	[शतृ]	चोरयत्	चोरयन्	चोरयन्ती
		[शानच्]	चोरयमाणम्	चोरयमाणः	चोरयमाणा

छिद्	काटना	शतृ	छिन्दत्	छिन्दन्	छिन्दती
		शानच्	छिन्दानम्	छिन्दानः	छिन्दाना
ज्ञा	जानना	शतृ	जानत्	जानन्	जानती
		शानच्	जानानम्	जानानः	जानना
नी	ले जाना	शतृ	नयत्	नयन्	नयन्ती
		शानच्	नयमानम्	नयमानः	नयमाना
ब्रू	कहना	शतृ	ब्रुवत्	ब्रुवन्	ब्रुवती
		शानच्	ब्रुवाणम्	ब्रुवाणः	ब्रुवाणा
लिह्	चाटना	शतृ	दधत्	दधन्	दधती
		शानच्	दधानम्	दधानः	दधाना
दुह्	दोहना	शतृ	दुहत्	दुहन्	दुहती
		शानच्	दुहानम्	दुहानः	दुहाना
भक्ष्	खाना	शतृ	भक्षयत्	भक्षयन्	भक्षयन्ती
		शानच्	भक्षयमाणम्	भक्षयमाणः	भक्षयमाणा

द्वितीयोऽभ्यासः

भूतकालिक - कृदन्त (क्त - क्तवतु)

1. भूतकाल के लिए प्रधानतः दो कृत् - प्रत्यय हैं - ''क्त'' और 2. ''क्तवतु'' ''क्त'' प्रत्यय का ''त'' तथा ''क्तवतु'' प्रत्यय का ''तवत्'' शेष रहता है।

''क्त'' प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य होता है और ''क्तवतु'' प्रत्यय कर्तृ वाच्य में। जैसे :-

''क्तवतु'' प्रत्यय में :- उसने जल पिया = सः जलं पीतवान्।

(क) ''क्त'' प्रत्यय :- ''क्त'' प्रत्यय का प्रयोग क्रिया विशेषण तथा संज्ञा के रूप में किया जाता है। ''क्त'' प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्म में होता है। ''क्त'' प्रत्ययान्त शब्द के लिङ्ग, वचन कर्म के अनुसार होते हैं,

एकवचन - मया पुस्तकं पठितम्।

द्विवचन - मया पुस्तके पठिते।

बहुवचन - मया पुस्तकानि पठितानि।

2. अकर्मक धातुओं में ''क्त'' प्रत्यय कर्त्ता और भाव में आता है। जब ''क्त'' प्रत्यय ''कर्त्ता'' से किया जाता है तब क्तान्त शब्द कर्त्ता के अनुसार प्रथमा विभक्ति में आता है। जैसे :- रामः गतः।

जब ''क्त'' प्रत्यय भाव में आता है तब कर्त्ता में तृतीया और ''क्त'' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा के एकवचन में ही प्रयुक्त होगा। जैसे :- रामेण हसितम्। इत्यादि।

(ख) ''क्तवतु'' प्रत्यय :- ''क्तवतु'' प्रत्यय सकर्मक और अकर्मक दोनों तरह की धातुओं से कर्त्ता में ही होता है। इसमें कर्तृ वाच्य के अनुसार कर्त्ता और ''क्तवतु'' प्रत्ययान्त शब्द में प्रथमा विभक्ति आती है तथा लिंग और वचन कर्त्ता के समान होते हैं। जैसे :-

सकर्मक धातु में - घोड़े ने जल पिया = अश्वः जलं पीतवान्।

उन दोनों ने शेर को मारा = तौ सिंहं हतवन्तौ।

अकर्मक धातुओं में - वह बालक हंसा = सः बालको हसितवान्।

''क्त - क्तवतु'' प्रत्ययान्त शब्द

धातु	अर्थ	क्त	क्तवतु
हस्	हंसना	हसितः	हसितवान्

ईक्ष्	देखना	ईक्षितः	इक्षितवान्
पठ्	पढ़ना	पठितः	पठितवान्
कथ	कहना	कथितः	कथितवान्
रच्	बनाना	रचितः	रचितवान्
पाल्	पालना	पालितः	पालितवान्
रक्ष्	बचाना	रक्षितः	रक्षितवान्
सेव्	सेवा करना	सेवितः	सेवितवान्
रुद्	रोना	रुदितः	रुदितवान्
लिख्	लिखना	लिखितः	लिखितवान्
छिद्	छेदना (काटना)	छिन्नः	छिन्नवान्
भिद्	भेदना	भिन्नः	भिन्नवान्
गम्	जाना	गतः	गतवान्
हन्	मारना	हतः	हतवान्
जन्	पैदा होना	जातः	जातवान्
सिंच्	सींचना	सिक्तः	सिक्तवान्
त्यज्	छोड़ना	त्यक्तः	त्वक्तवान्
नश्	नष्ट करना	नष्टः	नष्टवान्
दृश्	देखना	दृष्ट	दृष्टवान्
लभ्	पाना	लब्धः	लब्धवान्
बन्ध्	बाधना	बद्धः	बद्धवान्
रुध्	रोकना	रुद्धः	रुद्धवान्
स्था	ठहरना	स्थितः	स्थितवान्
ज्ञा	जानना	ज्ञातः	ज्ञातवान्
पा	पीना	पीतः	पीतवान्
दा	देना	दत्तः	दत्तवान्
शी	सोना	शायितः	शायतिवान्
भी	डरना	भीतः	भीतवान्
क्री	खरीदना	क्रीतः	क्रीतवान्
जि	जीतना	जितः	जितवान्
अधि-इ	पढ़ना	अधीतः	अधीतवान्
नी	ले जाना	नीतः	नीतवान्
श्रु	सुनना	श्रुतः	श्रुतवान्
कृ	करना	कृतः	कृतवान्
मृ	मारना	मृतः	मृतवान्
तृ	तैरना	तीर्णः	तीर्णवान्
कृ	बिखेरना	कीर्णः	कीर्णवान्
जृ	बूढ़ा होना	जीर्णः	जीर्णवान्
ह्वै	बुलाना	हतः	हतवान्
गै	गाना	गीतः	गीतवान्
यज्	यज्ञ करना	इष्टः	इष्टवान्
वद्	बोलना	उदितः	उदितवान्
वस्	रहना, बसना-	उषितः	उषितवान्
वह्	उठाना	ऊढः	ऊढवान्
प्रच्छ्	पूछना	पुष्टः	पुष्टवान्
ब्रू - (वच्)	कहना	उक्तः	उक्तवान्
ग्रह्	पकड़ना	गृहीतः	गृहीतवान्

अद्	खाना	जग्ध:	जग्धवान्
सह्	सहना	सोढ:	सोढवान्
शास्	शासन करना	शिष्ट:	शिष्टवान्
दह्	जलना	दग्ध:	दग्धवान्
रूह्	चढ़ना	रूढ़:	रूढ़वान्

तृतीयोऽध्यास:

कृत्य प्रत्यय (तव्यत् - अनीयर्)

''चाहिए'', ''योग्यात'' वा ''शक्यता'' के अर्थ में धातु के आगे ''तव्यत्'' और ''अनीयर्'' प्रत्यय धातु से लगाये जाते हैं। ''तव्यत्'' का ''तव्य'' और ''अनीयर्'' का ''अनीय'' शेष रहता है।

उपर्युक्त दोनों प्रत्यय कर्म या भाववाच्य में ही प्रयुक्त होते हैं। कर्तृवाच्य में नहीं। जैसे :-

कर्मवाच्य में :- यह आश्रम का मृग है इसे नहीं मारना चाहिए।

आश्रम मृगोऽयं न हन्तव्य:।

भाववाच्य में :- रात के दस बज गये हैं, अब तुम सबको सो जाना चाहिए।

निशाया दशवादनकालो जात:, सांप्रतं सर्वैर्युष्माभि: शयितव्यम्।

कर्तृवाच्य में :- ''चाहिए का अनुवाद विधिलिङ्ग'' से ही होता है। जैसे :-

''राम पाठं पठेत्'' इत्यादि।

''तव्यत्-अनीयर्'' प्रत्यान्त शब्द क्रिया के समान भी प्रयुक्त होते हैं और विशेषणों के समान भी। इन शब्दों की रुपावली पुं० में ''राम'' के समान, स्त्री० में ''लता'' के समान और नपुं० में ''पत्र'' के समान होती है।

''तव्यत्- अनीयर्'' प्रत्ययान्त शब्द

धातु	अर्थ	तव्यत्	अनीयर्
भू	होना	भवितव्य	भवनीय
श्रु	सुनना	श्रोतव्य	श्रवणीय
स्त	स्तुति करना	स्तोतव्य	स्तवनीय
स्था	ठहरना	स्थातव्य	स्थानीय
पा	पीना	पातव्य	पानीय
घ्रा	सूंघना	घ्रातव्य	घ्राणीय
ज्ञा	जानना	ज्ञातव्य	ज्ञानीय
हा	छोड़ना	हातव्य	हानीय
दा	देना	दातव्य	दानीय
शी	सोना	शयितव्य	शयनीय
नी	ले जाना	नेतव्य	नयनीय
भी	डरना	भेतव्य	भयनीय
क्री	खरीदना	क्रेतव्य	क्रयणीय
चि	चुनना	चेतव्य	चयनीय
अधि-इ	अध्ययन करना	अध्येतव्य	अध्ययनीय
कृ	करना	कर्त्तव्य	करणीय
हृ	हरना	हर्त्तव्य	हरणीय
स्मृ	याद करना	स्मर्त्तव्य	स्मरणीय
गै	गाना	गातव्य	गानीय
त्रै	रक्षा करना	त्रातव्य	त्राणीय
आप्	प्राप्त करना	आप्तव्य	आपनीय
ईक्ष्	देखना	ईक्षितव्य	ईक्षणीय
पच्	पकाना	पक्तव्य	पचनीय

पठ्	पढ़ना	पठितव्य	पठनीय
रक्ष्	रक्षा करना	रक्षितव्य	रक्षणीय
यत्	यत्न करना	यतितव्य	यतनीय
ग्रह्	पकड़ना	ग्रहीतव्य	ग्रहणीय
जन्	पैदा करना	जनितव्य	जननीय
रच्	रचना	रचितव्य	रचनीय
तन्	फैलाना	तनितव्य	तननीय
वप्	बोना	वप्तव्य	वपनीय
वस्	रहना	वस्तव्य	वसनीय
हस्	हंसना	हसितव्य	हसनीय
(ब्रू) –वच	कहना	वक्तव्य	वचनीय
हन्	मारना	हन्तव्य	हननीय
वह्	उठाना, ढोना	वोढव्य	वहनीय
सह्	सहना	सोढव्य	सहनीय
स्वप्	सोना	स्वप्तव्य	स्वपनीय
खाद्	खाना	खादितव्य	खादनीय
लिख्	लिखना	लिखितव्य	लेखनीय
क्रीड	खेलना	क्रीडितव्य	क्रीडनीय
याच्	माँगना	याचितव्य	याचनीय
शास्	शासन करना	शास्तिव्य	शासनीय
भाष्	कहना	भाषितव्य	भाषनीय
चुर्	चुराना	चोरयितव्य	चोरणीय
विद्	जानना	वेदितव्य	वेदनीय
क्षिप्	फैंकना	क्षेप्तव्य	क्षेपनीय
छिद्	छेदना	छेत्तव्य	छेदनीय
भिद्	भेदना	भेत्तव्य	भेदनीय
क्रुध्	क्रोध करना	क्रोद्धव्य	क्रोधनीय
बुध्	जानना	बोद्धव्य	बोधनीय
रुध्	रोकना	रोद्धव्य	रोधनीय
भुज्	भोगना, खाना	भोक्तव्य	भोजनीय
युध्	लड़ना	योद्धव्य	योधनीय
दुह्	दोहना	दोग्धव्य	दोहनीय
दृश्	देखना	द्रष्टव्य	दर्शनीय
त्यज	छोड़ना	व्यक्तव्य	त्यजनीय

चतुर्थोऽभ्यासः

पूर्वकालिक कृदन्त ('क्त्वा' एवम् 'ल्यप्')

जब दो क्रियाओं का एक ही कर्त्ता हो तो प्रथम समाप्त होने वाली (पूर्वकालिक) क्रिया का बोध करने के लिए धातु से ''क्त्वा'' या ''ल्यप्'' प्रत्यय लगा दिया जाता है। क्रिया से ''कर'' ''करके'' इत्यादि (जाकर, जा करके) पूर्वकालिक कृदन्तों का अनुवाद संस्कृत में ''क्त्वा'' ''ल्यप्'' प्रत्यान्त शब्दों से होता है।

''क्त्वा'' का ''त्वा'' और ''ल्यप्'' का ''य'' शेष रहता है। यदि धातु से पूर्व उपसर्ग लगा हो तो ''क्त्वा'' को ''ल्यप्'' हो जाता है। यदि ''ल्यप्'' का यह ''य'' ह्रस्व स्वर के बाद आ जाये तो ''त्य'' हो जाता है। वि – जि + य = विजित्य इत्यादि।

''क्त्वा'' एवम् ''ल्यप्'' प्रत्यान्त शब्द अव्यय रूप धारण कर लेते हैं अतः इनके रुप नहीं चलते।

पूर्वकालिक प्रत्ययान्त शब्द

धातु	क्त्वा	उपसर्ग	ल्यप्
आप्	आप्त्वा	प्र	प्राप्य
		सम्	समाप्य
इ	इत्वा	अधि	अधीत्य
ईक्ष्	ईक्षित्वा	प्र	प्रेक्ष्य
		सम्	समीक्ष्य
		उप	उपेक्ष्य
		परि	परीक्ष्य
हस्	हसित्वा	वि	विहस्य
		उप	उपहस्य
भिद्	भित्त्वा	वि	विभिद्य
छिद्	छित्त्वा	वि	विच्छिद्य
लिख्	लिखित्वा	वि	विलिख्य
गम्	गत्वा	उप	उपगम्य
नम्	नत्वा	प्र	प्रणम्य
हन्	हत्वा	नि	निहत्य
ग्रथ	ग्रथित्वा	सं	संग्रथ्य
ग्रह्	गृहीत्वा	सं	संगृह्य
घ्रा	घ्रात्वा	सम्-आ	समाघ्राय
चि	चित्वा	सं	संचित्य
जि	जित्वा	वि	विजित्य
श्रि	श्रित्वा	आ	आश्रित्य
नी	नीत्वा	आ	आनीय
पा	पीत्वा	नि	निपीय
स्था	स्थित्वा	उद्	उत्याय
दा	दत्त्वा	आ	आदाय
ज्ञा	ज्ञात्वा	वि	विज्ञाय
हा	हित्वा	वि	विहाय
पत्	पतित्वा	नि	निपत्य
लभ्	लब्ध्वा	उप	उपलभ्य
बस्	वसित्वा	अधि	अध्युष्य
कृ	कृत्वा	अनु	अनुकृत्य
क्री	क्रीत्वा	वि	विक्रीय
कृ	कृत्वा	वि	विक्रीर्य
क्षिप्	क्षित्वा	नि	निक्षप्य
चिन्त्	चिन्तयित्वा	सं	सञ्चित्य
तृ	तीर्त्वा	सं	संतीर्य
चिन्त्	चिन्तयित्वा	सं	सञ्‍ चत्य
त्यज	त्यक्त्वा	परि	परित्यज्य
रूह्	रूढ्त्वा	अव	आरुह्य
भू	भूत्वा	सं	संभूय
मन	मत्वा	अव	अवमत्य
मन्थ	मथित्वा	सं	संमथ्य
रुध्	रुद्ध्वा	अव	अवरुद्ध्य
सिञ्च्	सिक्त्वा	नि	निषिच्य
शम्	शमित्वा	नि	निंशम्य

शी	शयित्वा	वि	विशय्य
प्रच्छ्	पृष्टवा	सं	संपृच्छय
विश्	विष्टवा	प्र	प्रविश्य
सृज्	सृष्टवा	वि	विसृज्य

पञ्चमोऽभ्यासः

कृदन्त (तुमुन्) प्रत्यय

जब एक ही व्यक्ति द्वारा जिस क्रिया के लिए कोई और क्रिया की जाती हो तब इसके लिए धातु के आगे ''तुमुन्'' प्रत्यय लगा दिया जाता है।

''तुमुन्'' प्रत्यय का ''तुम्'' शेष रहता है। ''तुमुन्'' प्रत्ययान्त शब्द रूप धारण कर लेते हैं अतः इनके रूप नहीं चलते।

1. ''को'' ''के लिए'' आदि निमित्त अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से ''तुमुन्'' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे :-
   वह पढ़ने के लिए स्कूल जाता है = सः पठितुं विद्यालयं गच्छति।
2. इच्छार्थक क्रिया के निमित्त में ''तुमुन्'' प्रत्यय :-
   वह पाठ पढ़ना चाहता है = सः पाठं पठितुमिच्छति।
3. समयवाची - शब्दों के योग में ''तुमुन्'' प्रत्यय :-
   यह समय पुस्तक पढ़ने का है = कालोऽयं पुस्तकं पठितुम्।
4. शक्ति (सकता) के योग में ''तुमुन्'' प्रत्यय :-
   वह पाठ आज नहीं पढ़ सकता है - नाद्य सः पाठं पठितुं शक्नोति।

''तुमुन्'' प्रत्ययान्त शब्द

धातु	तुमुन्	अर्थ
अर्च्	अर्चितुम्	पूजा करने के लिए
अर्ज्	अर्जितुम्	कमाने के लिए
आस्	आसितुम्	बैठने के लिए
अट्	अटितुम्	घूमने के लिए
अधि-इ	अध्येतुम्	पढ़ने के लिए
ईक्ष्	ईक्षितुम्	देखने के लिए
स्था	स्थातुम्	ठहरने के लिए
स्ना	स्नातुम्	नहाने के लिए
पा	पातुम्	पाने के लिए
दा	दातुम्	देने के लिए
ज्ञा	ज्ञातुम्	जाने के लिए
धा	धातुम्	धारण करने के लिए
या	यातुम्	जाने के लिए
घ्रा	घ्रातुम्	सूँघने के लिए
चि	चेतुम्	चुनने के लिए
जि	जेतुम्	जीतने के लिए
चिन्त्	चिन्तयितुम्	सोचने के लिए
छिद्	छेतुम्	काटने के लिए
भिद्र्	भेतुम्	भेदने के लिए
लिख्	लेखितुम्	लिखने के लिए
विश्	वेष्टुम्	प्रवेश करने के लिए
भी	भेतुम्	प्रवेश करने के लिए
शी	शयितुम्	सोने के लिए
नी	नेतुम्	ले जाने के लिए

वि-क्री	विक्रेतुम्	बेचने के लिए
क्री	क्रीतुम्	खरीदने के लिए
क्रीड्	क्रीडितुम्	खेलने के लिए
भू	भवितुम्	होने के लिए
श्रु	श्रोतुम्	सुनने के लिए
क्रुध्	क्रोद्धम्	क्रोध करने के लिए
दुह	दोग्धुम्	दोहने के लिए
भुज्	भोक्तुम्	भोजन करने के लिए
मुद्	मोदितुम्	प्रसन्न होने के लिए
रुद्	रोदितुम्	रोने के लिए
रुध्	रोद्धम्	रोकने के लिए
कृ	कर्तुम्	करने के लिए
तृ	तरितुम्	तैरने के लिए
स्मृ	स्मर्तुम्	याद करने के लिए
हृ	हर्तुम्	हरने के लिए
नृत्	नर्तितुम्	नाचने के लिए
गै	गातुम्	गाने के लिए
ध्यै	ध्यातुम्	ध्यान करने के लिए
दृश्	द्रष्टुम्	देखने के लिए
वृत्	वर्तितुम्	होने के लिए
वृध्	वर्धितुम्	बढ़ने के लिए
नम्	नन्तुम	नमस्कार के लिए
गम्	गन्तुम्	जाने के लिए
भ्रम्	भ्रमितुम्	घूमने के लिए
हन्	हन्तुम्	मारने के लिए
पठ्	पठितुम्	पढ़ने के लिए
हस्	हसितुम्	हंसने के लिए
सेव्	सेवितुम्	सेवा करने के लिए
चल्	चलितुम्	चलने के लिए
चुर्	चोरयितुम्	चुराने के लिए
यत्	यतितुम्	यत्न करने के लिए
कथ्	कथयितुम्	कहने के लिए
जन्	जनितुम्	पैदा होने के लिए
ग्रह्	ग्रहीतुम्	ग्रहण करने के लिए
दण्ड्	दण्डयितुम्	दण्ड देने के लिए
शास्	शासितुम्	शासन करने के लिए
नश्	नष्टुम्	नष्ट होने के लिए
वप्	वप्तुम्	बोने के लिए
ब्रू (वच)	वक्तुम्	बोलने के लिए
वस्	वस्तुम्	रहने के लिए
वह्	वोढुम	उठाने के लिए, ढोने के लिए
सह्	सोढुम्-सहितुम्	सहन करने के लिए
सिंच्	सेक्तुम्	सींचने के लिए
प्रच्छ्	प्रष्टुम्	पूछने के लिए
लभ्	लब्धुम्	पाने के लिए
पच्	पक्तुम्	पकाने के लिए
स्वप्	स्वप्तुम्	सोने के लिए